चीन ने जमाखोरी के लिए छिपाया कोरोनाः अमेरिका

आरोप

चीन ने कोरोना के घातक होने की जानकारी जानबूझकर गोपनीय रखी

■एन 95 मास्क, पीपीई किट की जमाखोरी करने के चलते छिपाया कोरोना वायरस

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

वाशिंगटन। कोरोना वायरस की जानकारी को छिपाने को लेकर अमेरिका ने एक बार फिर से चीन पर बड़ा हमला बोला है। अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि चीन ने कोरोना वायरस के प्रकोप के पैमाने और बीमारी के अति संक्रामक होने की बात जानबूझकर गोपनीय रखी। दरअसल, चीन कोरोना से निपटने के लिए जरूरी चिकित्सीय आपूर्तियों को जमा कर रहा था।

अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि खुफिया दस्तावेजों में यह जानकारी सामने आई है। एजेंसी को प्राप्त हुए गृह सुरक्षा मंत्रालय के चार पन्नों वाले दस्तावेज के मुताबिक चीन के नेताओं ने जनवरी की शुरुआत में दुनिया से वैश्विक महामारी की 'गंभीरता जानबूझकर छिपाई। इन

दस्तावेजों पर एक मई की तारीख अंकित है। यह खुलासा ऐसे समय में हुआ है जब ट्रंप प्रशासन लगातार चीन की आलोचना कर रहा है।

विदेश मंत्री माइक पोम्पिओ ने रविवार को कहा कि बीमारी के प्रसार के लिए चीन जिम्मेदार है और उसे इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

चीन की तीखी आलोचना के साथ ही प्रशासन के आलोचक सरकार पर भी सवाल उठा रहे हैं और कह रहे हैं कि वायरस के खिलाफ सरकार की प्रतिक्रिया अपर्याप्त और धीमी है।

ट्रंप के विरोधियों ने लगाया गंभीर आरोपः राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों ने राष्ट्रपति और उनके प्रशासन पर आरोप लगाया है कि वे अपनी आलोचना को दूसरी दिशा में मोड़ने के लिए चीन पर दोष मढ़ रहे हैं जो एक भू–राजनीतिक दुश्मन तो है लेकिन अमेरिका का अहम व्यापारिक साझेदार भी है। आकलन में कहा गया है कि चीन कोरोना वायरस की गंभीरता को कमतर बताता रहा और इस दौरान उसने चिकित्सीय आपूर्तियों का आयात बढ़ा दिया जबकि निर्यात को घटा दिया।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि चीन ने लगभग पूरी जनवरी विश्व स्वास्थ्य संगठन को यह सूचना नहीं दी कि कोरोना वायरस संक्रामक है ताकि वह विदेशों से चिकित्सा सामग्रियां मंगा सके और इस दौरान फेस मास्क, सर्जिकल गाउन और दस्तावेजों का उसका आयात तेजी से बढ़ा था। रिपोर्ट के मुताबिक ये परिणाम 95 प्रतिशत संभावना पर आधारित हैं कि आयात एवं निर्यात नीति में चीन के बदलाव सामान्य नहीं थे।

न्यूज डायरी

आरोपियों के खिलाफ पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट पहुंचे डेनियल पर्ल के माता–पिता

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) इस्लामाबाद। दिवंगत अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल के पैरेंट्स ने अपने बेटे के अपहरण और हत्या मामले में पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। याचिका में सिंध हाई कोर्ट के फैसले को बदलने की मांग करते की गई है, जिसमें हत्यारों की फांसी की सजा को कैद में बदल दिया गया था। 'द वाल स्ट्रीट जर्नल'के दक्षिण एशिया ब्यूरो प्रमुख पर्ल (38) का 2002 में अपहरण कर लिया गया था और फिर उनकी हत्या कर दी गई थी। उस वक्त वह पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और अल कायदा के बीच कथित संबंधों के बारे में एक खबर के लिए छानबीन कर रहे थे। गौरतलब है कि दो अप्रैल को सिंध हाई कोर्ट की दो जजों की पीठ ने पर्ल के अपहरण और हत्या की घटना में दोषी ठहराए गए ब्रिटिश मूल के अल–कायदा कमांडर अहमद उमर सईद शेख (46) की फांसी की सजा को कैद में तब्दील कर दिया। अदालत ने उसके तीन सहयोगियों को बरी कर दिया।

'नमस्ते' ने भारत को कोविड–19 के कहर से बचाया!

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) न्यूयॉर्क। दुनियाभर में कोरोना वायरस से बचने के लिए भारत में एक–दूसरे को अभिवादन करने का तरीका 'नमस्ते' दूसरे देशों के अभिवादन के तरीके से अधिक कारगर साबित हो सकता है, क्योंकि इसमें सामाजिक दूरी बनी रहती है। कोविड–19 के संक्रमण से बचने के लिए सामाजिक दूरी यानी सोशल डिस्टेंसिंग को सबसे अहम माना जा रहा है। कहा जा रहा है कुछ देश सांस्कृतिक वजहों से इस बीमारी के भयंकर प्रकोप से बचा हुआ है। 'न्यूयॉर्क टाइम्स' की रिपोर्ट 'द कोविड–19 रिडलः व्हाई डज द वायरस वैलॉप सम प्लेसेज एंड स्पेयर अदर्स?' के अनुसार कोरोना वायरस ने पृथ्वी पर लगभग हर जगह अपना प्रकोप दिखाया है। न्यूयॉर्क, पेरिस और लंदन जैसे महानगरों में जहां इससे तबाही मची है वहीं बैंकॉक, बगदाद, नई दिल्ली और लागोस जैसे शहरों में स्थिति अब तक नियंत्रण में है।

यूएई में डेढ़ लाख से ज्यादा भारतीयों ने घर लौटने के लिए रजिस्ट्रेशन कराया

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) दुबई। संयुक्त अरब अमीरात में एक लाख 50 हजार से अधिक भारतीयों ने कोरोना वायरस संक्रमण की रोकथाम के लिए जारी लॉकडाउन के बीच घर लौटने के लिए आनलाइन पंजीयन प्रक्रिया के तहत भारतीय मिशनों में आवेदन दिया है। भारतीय मिशनों ने कोरोना वायरस महामारी के कारण जारी लॉकडाउन के कारण यहां फंसे और घर लौटने के इच्छुक भारतीयों के लिए पिछले हफ्ते ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू की था। भारत के महावाणिज्य दूत विपुल ने शनिवार को गल्फ न्यूज को बताया, शनिवार की शाम छह बजे तक हमने एक लाख 50 हजार से अधिक पंजीयन प्राप्त किए हैं। उन्होंने बताया कि उनमें से एक चौथाई ऐसे हैं जो अपनी नौकरी गंवाने के बाद स्वदेश लौटना चाहते हैं।

झेलीं सबसे ज्यादा मौतें, नई शुरुआत को तैयार हो रहा यूरोप

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) यूरोप। झेलीं सबसे ज्यादा मौतें, नई शुरुआत को तैयार हो रहा यूरोपकोरोना वायरस के चलते दुनिया में सबसे ज्यादा तबाही झेलने वाला यूरोप अब लॉकडाउन में ढील दे रहा है। यूरोप में 1,39,000 से अधिक लोगों की कोरोना वायरस से मौत की पुष्टि हुई है। इनमें से इटली और ब्रिटेन में 28 हजार से अधिक मौतें हुई जबकि फ्रांस और स्पेन में 25 हजार से अधिक लोगों ने जान गंवाई है। यूरोपीय देशों में कोरोना के मामलों की संख्या बढ़ तो रही है लेकिन कई जगहों पर हर दिन होने वाली बढ़ोतरी में कमी आई है। इटली में लॉकडाउन के बाद रविवार को सबसे कम 174 मौतें दर्ज कीं। वहीं, ब्रिटेन में प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने लॉकडाउन खोलने के लिए 11 पॉइंट्स का प्लान तैयार किया है। स्पेन में लोग लॉकडाउन में ढील मिलने पर बाहर निकले हैं। ब्रिटेन में प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन पर इस बात का खुलासा करने का दबाव है कि 23 मार्च से देश में लागू लॉकडाउन से कैसे बाहर निकला जाएगा।

पाकिस्तानी एयर फोर्स में शामिल हुआ पहला हिंदू पायलट

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के इतिहास में पहली बार एक हिंदू को पाकिस्तान एयर फोर्स में पायलट चुना गया है। इस युवक का नाम है राहुल देव और उन्हें पाकिस्तान एयर फोर्स में जनरल ड्यूटी पायलट ऑफिसर के रूप में चुना गया है। अल्पसंख्यकों के साथ अत्याचार के लिए बदनाम पाकिस्तान में एक हिंदू का पायलट का चुना जाना बड़ी सुखद घटना माना जा रहा है। पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक राहुल देव थारपारकर के रहने वाले हैं। थारपारकर पाकिस्तान के सिंध प्रांत का सबसे बड़ा जिला है। थारपारकर जिले में बड़ी संख्या में हिंदू समुदाय के लोग रहते हैं। राहुल देव के पायलट चुने जाने पर पाकिस्तानी हिंदुओं ने खुशी जताई है। ऑल पाकिस्तान हिंदू पंचायत सेक्रटरी रवि दवानी ने राहुल देव के पायलट चुने जाने पर खुशी जताई है।

दवानी ने कहा कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोग सिविल सर्विसेज और पाकिस्तानी आर्मी में सेवा दे रहे हैं। यही नहीं पाकिस्तान में कई डॉक्टर भी हिंदू हैं। उन्होंने कहा कि अगर पाक सरकार अल्पसंख्यकों पर अपना ध्यान बनाए रखती है तो आने वाले दिनों में राहुल देव अपने देश की सेवा के लिए तैयार हो जाएंगे।

तुर्की के समसुन शहर पर भेड़ों ने किया कब्जा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) इस्तांबुल। कोरोना वायरस के कहर से दुनियाभर में लॉकडाउन चल रहा है। विश्व की करीब आधी आबादी घरों में कैद है। कोरोना लॉकडाउन के बीच सड़कों पर इंसानों की गैरमौजूदगी का पूरा फायदा जानवर उठा रहे हैं। ऐसा ही एक नजारा तुर्की के एक शहर समसुन में बीती रात देखने को मिला। समसुन शहर में हजारों की संख्या में भेड़ें सड़क पर आ गईं और इधर–उधर घूमने लगीं। भेड़ों के इस विडियो को मिडिल ईस्ट आई के एक संवाददाता सोयलू ने ट्विटर पर पोस्ट किया है। इस वीडियो को अब तक लाखों लोगों ने देखा है।

ट्रंप ने कहा, इस साल के अंत तक उपलब्ध होगा कोविड–19 के लिए टीका

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

वाशिंगटन। कोरोना महासंकट के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्हें यकीन है कि कोविड–19 के लिए टीका इस साल के अंत तक उपलब्ध हो जाएगा। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिकी सरकार रेमेडेसिवीर दवा के पीछे श्अपनी पूरी ताकतश लगा रही है। इस दवा ने कोरोना वायरस के कारण होने वाली बीमारी के इलाज में अच्छे नतीजे दिए हैं।

ट्रंप ने फॉक्स न्यूज चौनल द्वारा प्रायोजित टीवी पर प्रसारित टाउनहॉल के दौरान रविवार रात यह टिप्पणी की। ट्रंप लिंकन मेमोरियल के भीतर मौजूद थे

और उन्होंने फॉक्स के दो एंकर के साथ ही फॉक्स के सोशल मीडिया मंचों पर लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए। ट्रंप ने कोविड–19 से स्वस्थ हुए नेब्रास्का के एक व्यक्ति के सवाल का यह कहकर जवाब दिया, मेरे विचार में इस साल के अंत तक हमें टीका प्राप्त हो जाएगा।

अमेरिकी सरकार रेमेडेसिवीर दवा के पीछे अपनी पूरी ताकत लगा रही

साथ ही उन्होंने कहा कि उनका प्रशासन रेमेडेसिवीर के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। अमेरिकी जन स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा है कि टीका उपलब्ध होने में एक साल से 18 महीने तक का समय लग सकता है। संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉक्टर एंथनी फाउची ने अप्रैल के अंत में हालांकि कहा था कि यह सोचना होगा कि अगर कोई टीका जल्द विकसित हो भी जाता है तो भी व्यापक पैमाने पर उसका वितरण अगली जनवरी तक ही हो पाएगा।

वुहान लैब ने गायब कर दीं वैज्ञानिकों की तस्वीरें

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज) चीन। चीन की कोरोना महामारी को छिपाने की नई चाल, वुहान लैब ने गायब कर दीं वैज्ञानिकों की तस्वीरेंकोरोना वायरस महामारी को लेकर दुनियाभर में विवादों में चल रहे चीन के वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वॉयरोलॉजी ने अपनी वेबसाइट से लैब में काम करते हुए वैज्ञानिकों की तस्वीरें डिलीट कर दी हैं। इन तस्वीरों से साफ पता चलता है कि कैसे इस लैब के वैज्ञानिक लापरवाही और कम सुरक्षा उपकरणों के साथ खतरनाक वायरस पर टेस्ट करते थे। माना जा रहा है कि कोरोना महामारी से निपटने में अपनी खामियों को छिपाने के लिए चीन ने यह कदम उठाया है। कोरोना वायरस महामारी से विश्वभर में 2,48,256 मारे गए हैं और 35 लाख से ज्यादा लोग संक्रमित हैं। इस महामारी के गढ़ रहे चीन से यह वायरस खत्म होने की कगार पर है, वहीं पूरी दुनिया इससे जूझ रही है। इस बीच मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इंस्टीट्यूट का स्टाफ बिना किसी सुरक्षा किट के गुफाओं में जाकर चमगादड़ों को पकड़ता था और स्वाब इक्ट्ठा करता था। वहीं इस वॉयरोलॉजी में एक फ्रिज में 1500 तरह के वायरस को एक साथ रखने वाली तस्वीर भी सामने आई थी।